इकाई 2 मूलभूत आर्थिक अवधारणाएँ

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र
2.3 अर्थशास्त्र में बाज़ार की अवधारणा
2.4 माँग का अर्थ
2.5 वस्तु का माँग-वक्र
2.6 पूर्ति का अर्थ
2.7 वस्तु का पूर्ति-वक्र
2.8 अर्थशास्त्र में कीमत का अर्थ
2.9 संतुलन एवं असंतुलन से अभिप्राय
2.10 सारांश
2.11 शब्दावली
2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें
2.13 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप इन विषयों पर समुचित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे :

- अर्थशास्त्र की समष्टि एवं व्यष्टि अध्ययन शाखाओं में मूलभूत अंतर;
- बाज़ार की अवधारणा एवं इसकी कार्य प्रणाली;
- माँग एवं पूर्ति फलन;
- संतुलन एवं असंतुलन की अवधारणाएँ एवं अर्थशास्त्र में इनका महत्त्व; तथा
- माँग-पूर्ति द्वारा किसी वस्तु की कीमत एवं खरीदी-बेची गई मात्रा का निर्धारण।

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई का आरंभ हम व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र के भेद से कर रहे हैं। इस इकाई में केवल व्यष्टि अर्थशास्त्र के बारे में बात करेंगे और क्योंकि व्यष्टिगत अर्थशास्त्र का संबंध केवल व्यक्तिगत बाज़ारों से है, इसलिए हम बाज़ार की अवधारणा के बारे में बात करेंगे। बाज़ार व्यवहार के अध्ययन में किसी वस्तु की माँग एवं पूर्ति दो आधारभूत उपकरण हैं। यदि किसी वस्तु का बाज़ार है तो उसकी कीमत भी अवश्य ही होगी। अतः हमारा अगला कदम कीमत की अवधारणा की व्याख्या करना होगा। बाज़ार में सारा लेन-देन किसी न किसी कीमत पर ही होता है। बाज़ार में कीमत ही वस्तु की माँग एवं पूर्ति के बीच समानता लाकर 'संतुलन' पैदा करती है। अतः इस इकाई में हम संतुलन एवं असंतुलन की अवधारणाओं पर भी विचार करेंगे।

2.2 व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र

व्यष्टि और समष्टि शब्दों के अर्थ हैं छोटे और बड़े या सामूहिक। व्यष्टि अर्थशास्त्र आधारभूत आर्थिक इकाइयों जैसे कि एक उपभोक्ता, एक उत्पादक, एक उद्योग, एक उद्योग, एक बाज़ार या फिर किसी आगत के एक आपूर्तिकर्ता के व्यवहार से जुड़ा है। विश्लेषण की इकाई छोटी ही रहती है। समष्टि अर्थशास्त्र में हम बड़ी (व्यापक) इकाई का अध्ययन करते हैं। वास्तव में ये दोनों विश्लेषण विधियाँ एक अर्थव्यवस्था की कार्य पद्धति के अध्ययन से जुड़ी हैं। दोनों इस अध्ययन का आरंभ अलग-अलग दृष्टिकोणों से करती हैं। अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली का विश्लेषण दो बातों से प्रारंभ किया जाता है। इसमें प्रथम है व्यष्टि आर्थिक सिद्धांत जो कि व्यक्तिगत बाज़ारों (जैसे अनाज का बाज़ार), उपभोक्ताओं (जैसे गेहूँ के), फर्मों, उद्योगों पर केंद्रित है। व्यष्टि सिद्धांत में अर्थव्यवस्था की आधारभूत घटक इकाइयों पर ध्यान दिया जाता है। इस बात की सूक्ष्मता से जाँच की जाती है कि ये इकाइयाँ कैसे कार्य करती हैं, इनकी निर्णय प्रक्रिया क्या है और इनके परस्पर संबंध किस तरह संचालित होते हैं। दूसरा है समष्टिगत आर्थिक सिद्धांत जिसमें राष्ट्रीय व्यय, समग्र उपभोग, समग्र निवेश व्यय, रोज़गार का स्तर व सामान्य कीमत स्तर जैसे विस्तृत समूहों **(aggregates)** का अध्ययन किया जाता है। इसमें यह विश्लेषण किया जाता है कि इन विस्तृत समूहों के आपसी संबंधों के आधार पर अर्थव्यवस्था कैसे कार्य करती हैं, इन विस्तृत समूहों का व्यवहार क्या है, तथा इनका निर्धारण कैसे होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यष्टि तथा समष्टि सिद्धांतों का अंतर इस बात पर आधारित है कि अर्थव्यवस्था का अध्ययन कितने छोटे या बड़े समूह के आधार पर किया जाता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र में सभी चर अपने वैयक्तिक स्वरूप में होते हैं जबकि समष्टि अर्थशास्त्र में उनके सामूहिक स्वरूप का अध्ययन होता है। इस दृष्टि से ये दोनों अर्थशास्त्र एक ही सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि अंततः सभी आर्थिक निर्णय वैयक्तिक स्तर पर ही लिए जाते हैं और ऐसे छोटे-छोटे निर्णयों का सामूहिक उपभोग व्यय सभी उपभोक्ताओं के वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च का योगमात्र है। इसी तरह से अर्थव्यवस्था के समष्टि व्यवहार का प्रभाव वैयक्तिक स्तर पर निर्णय लेने पर भी पड़ेगा। यदि आयकर की दरें बढ़ा दी जाएँ तो परिवारों की प्रयोज्य आय कम हो जाएगी, फर्मों की बिक्री कम होगी और परिणामस्वरूप उत्पादन में कटौती करना आवश्यक हो जाएगा। इस प्रकार एक समष्टि स्तर की घटना से अर्थव्यवस्था में व्यष्टि स्तर पर भी प्रतिक्रियाएँ अवश्य होती हैं।

व्यष्टि अर्थशास्त्र में हमारा ध्यान मूलतः वस्तुओं और उत्पादक साधनों की सापेक्ष कीमतों पर केंद्रित रहेगा। इस दृष्टि से इसे कीमत सिद्धांत का नाम देना गलत नहीं होगा। जेम्स क्वर्क **(James Quirk)** का कहना है कि समष्टि अर्थशास्त्र एक ऐसी सैद्धांतिक रूपरेखा प्रदान करता है जिसके अनुसार अर्थशास्त्री फर्म, उपभोक्ता, उद्योग, वस्तु और बाज़ार जैसी मौलिक आर्थिक इकाइयों के व्यवहार और अंतःसंबंधों की व्याख्या कर सकते हैं। इस अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य यह बात समझाना है कि उत्पादन, विनिमय, वस्तुओं और सेवाओं के आबंटन आदि किस प्रकार सम्पन्न होते हैं और किसी समाज में ये क्रियाएँ विभिन्न प्रेरणाओं या प्रोत्साहनों के प्रति किस प्रकार व्यवहार करती है।

बोध प्रश्न 1

1) इनमें से कौन से कथन व्यष्टि अर्थशास्त्र से संबंधित हैं?

   क) यदि मुद्रास्फीति बढ़ती है तो भारतीय अर्थव्यवस्था वस्त्रों की कम मात्रा का ही निर्यात कर पाती है।

   .....

   .....

ख) गेहूँ की आपूर्ति बढ़ने पर इसकी कीमत गिर जाती है।

.....

.....

ग) मदर डेयरी में हड़ताल होने पर दूध की कीमत बढ़ जाती है।

.....

.....

घ) निवेश में वृद्धि होने से रोज़गार बढ़ता है।

.....

.....

2.3 अर्थशास्त्र में बाज़ार की अवधारणा

आम बोलचाल की भाषा में बाज़ार का अर्थ है वह स्थान जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय हो– जैसे आज़ादपुर की सब्जी-मंडी, पहाड़गंज या कोटला की लक्कड़-मंडी, खारी बावली की अनाज-मंडी, चाँदनी चौक का कपड़ा बाज़ार, चावड़ी बाज़ार का कागज़ बाज़ार अथवा कीर्ति नगर का फर्नीचर बाज़ार। पर अर्थशास्त्र में बाज़ार का अर्थ इससे कहीं भिन्न और अधिक व्यापक है। एक अर्थशास्त्री की दृष्टि से बाज़ार उन जटिल गतिविधियों का नाम है जिनमें संभावित क्रेता और विक्रेता वस्तुओं और सेवाओं के क्रय-विक्रय करने के लिए एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं। जहाँ भी और जब कभी दो या उससे अधिक व्यक्ति कुछ क्रय-विक्रय करते हैं तो वहीं पर चाहे स्थान या समय कुछ भी हो बाज़ार बन जाता है। क्रेता और विक्रेता की शारीरिक उपस्थिति **(physical presence)** अर्थशास्त्र की बाज़ार की अवधारणा के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है। आधुनिक संचार व्यवस्था और कम्प्यूटर तकनीकों के विकास के कारण तो बाज़ार की स्थापना के लिए व्यक्तियों की उपस्थिति की आवश्यकता ही नहीं रह गई है। बस दो ऐसे व्यक्ति या समूह होने चाहिए जो विनिमय करने को उत्सुक हों। बाज़ार की मूलभूत विशेषता संभावित खरीदारों और विक्रेताओं के बीच सौदेबाजी है जिससे ही विनिमय की शर्तों का निर्धारण होता है। यहाँ संभावित शब्द पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। बाज़ार में आने वाला हर व्यक्ति प्रचलित कीमतों पर कुछ न कुछ निश्चित मात्रा में खरीदारी करने या बेचने की मंशा से आता है। किंतु यदि प्रचलित कीमत अधिक हो तो कम कीमत पर खरीदारी के इच्छुक बाज़ार से बाहर ही रह जाते हैं। इसी तरह बाज़ार कीमत कम होने की स्थिति में ऊँचे दामों पर बिक्री करने की आशा में आए लोग बाज़ार से बाहर ही रह जाएँगे। बाज़ार की गतिविधियाँ यह निश्चित करेंगी कि कीमत क्या रहेगी, कितनी मात्रा का क्रय-विक्रय होगा और क्रेता-विक्रेता कौन होंगे। एक बाज़ार अर्थव्यवस्था में बाज़ार ही विभिन्न उत्पादों के बीच संसाधनों का आबंटन करता है। बाज़ार का स्वरूप पूर्ण प्रतियोगी, एकाधिकारी, अपूर्ण प्रतियोगी, एकाधिकारी प्रतियोगी या अल्पाधिकारी प्रतियोगी भी हो सकता है। बाज़ार का अस्तित्व संसाधनों के प्रयोग में कुशलता लाती है। बाज़ार से ही कौशलतापूर्ण निर्णय के लिए आवश्यक जानकारी मिलती है। इस जानकारी में वस्तुओं की प्रकृति, प्रचलित कीमत और संभावित क्रेता-विक्रेता आदि सम्मिलित रहते हैं। इनके अतिरिक्त बाज़ार से कोई और जानकारी नहीं मिलती। सामान्यतः बाज़ार की यह जानकारी निःशुल्क उपलब्ध रहती है, यद्यपि कुछ वस्तुओं से जुड़ी बाज़ार 'जानकारी के लिए' कभी-कभी समय, पैसा और प्रयास तीनों की ही आवश्यकता पड़ जाती है। आधुनिक संचार

व्यवस्था ने जानकारी के संग्रह, संचय और प्रयोग को काफी सहज बना दिया। इससे निश्चित रूप से निर्णय प्रक्रिया में सुधार हुआ है। अब बाज़ार के अस्तित्व और कुशलता पूर्ण व्यवहार के लिए केवल इतना ही आवश्यक है कि वस्तुओं के स्वामित्व के अधिकारों की परिभाषा सही ढंग से की गई हो, देश के कानून इन्हें संरक्षण देते हों और ये अधिकार हस्तांतरणीय हों। इन स्वामित्व अधिकारों का अर्थ है कि सम्पत्ति का स्वामी उस वस्तु के संबंध में कुछ फैसले स्वयं कर सके। इन फैसलों में सम्मिलित हैं : किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उस वस्तु के प्रयोग पर बंधन और यदि अन्य व्यक्ति इसे प्रयोग करे तो ऐसे प्रयोग के लिए कुछ कीमत वसूल कर सकना; और इन वस्तुओं और सेवाओं का स्वामित्व किसी और को पूरी तरह हस्तांतरित कर सकना। जेम्स क्वर्क कहते हैं 'अर्थव्यवस्था में उत्पादित, क्रय-विक्रय की गई और उपभोग की गई सभी चीज़ें सम्पत्ति अधिकार ही है जिन्हें हम वस्तुएँ कहते हैं। किसी भी समाज में आर्थिक गतिविधियों का स्वरूप सम्पत्ति अधिकारों के ढाँचे से पूरी तरह जुड़ा होता है क्योंकि इन्हीं सम्पत्ति अधिकारों से स्व-हितों **(self-interest)** की अभिव्यक्ति होती है और प्रोत्साहन प्रभावी होते हैं।'

2.4 माँग का अभिप्राय

अर्थशास्त्र में माँग का अर्थ प्रभावी माँग है न कि कुल **(absolute)** माँग। एक उपभोक्ता या परिवार द्वारा वस्तु की माँग का अर्थ है खरीदने की इच्छा के साथ-साथ भुगतान करने की क्षमता भी होना। दूसरे शब्दों में, वे ही मानवीय इच्छाएँ माँग कहलाती हैं जिनको प्राप्त करने के लिए क्रय-शक्ति भी हो। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी वस्तु की इच्छा तभी माँग बन सकती है जबकि वह व्यक्ति उस वस्तु की कीमत चुकाने को तैयार हो और कीमत अदा करने की क्षमता भी हो। यदि व्यक्तियों के पास दाम चुकाने की क्षमता हो तो बाज़ार में उनकी माँग प्रभावी माँग बन जाती है। सामान्यतः दाम चुकाने की क्षमता व्यक्ति की आय पर निर्भर करती है।

एक उदाहरण : एक भिखारी दूध पीना चाहता है पर उसके पास पैसे नहीं हैं अतः उसकी दूध की इच्छा को प्रभावी माँग नहीं कहा जा सकता। वह बाज़ार की क्रय-विक्रय की गतिविधि में भाग नहीं लग सकता। किंतु यदि वह व्यक्ति कहीं रोज़गार पाने में सफल हो जाए– किसी दुकान में मज़दूर बन जाए और अपने काम की एवज़ में उसे नकद मज़दूरी मिले– तो व्यक्ति अब बाज़ार से दूध खरीदने में समर्थ हो जाएगा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह व्यक्ति अब भिखारी नहीं रहा। वैसे यदि यह आदमी अपनी भीख में माँगी गई रकम में से दूध पैसे देने को तैयार हो तो भी उसकी माँग प्रभावी माँग बन जाएगी। अतः किसी व्यक्ति के लिए वस्तु बाज़ार में भाग लेने के लिए रोज़गारशुदा होना आवश्यक नहीं है। पहले उस व्यक्ति की दूध की माँग इच्छा मात्र थी पर अब प्रभावी माँग बन जाती है। अब बाज़ार माँग में इस व्यक्ति की माँग जुड़ गई और दुग्ध उत्पादक को इस माँग को ध्यान में रखकर उत्पादन करना होगा। अतः वस्तुओं की माँग के अस्तित्व के लिए दो शर्तों का पूरा होना आवश्यक है:

1) व्यक्ति की उस वस्तु को पाने की इच्छा हो;

2) इस वस्तु को पाने के लिए आय, क्रय शक्ति या भुगतान क्षमता हो।
साथ ही यह भी आवश्यक है कि व्यक्ति कीमत चुकाना चाहता हो।

बोध प्रश्न 2

1) आपका वेतन तीन हज़ार रुपये मासिक है और आप ऑफिस आने-जाने के लिए टैक्सी का

प्रयोग करना चाहते हैं। क्या आपकी यह इच्छा टैक्सी सेवाओं की माँग कही जा सकती है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) आपको चाय बहुत पसंद है। इस बात का विश्लेषण करें कि आपकी चाय की माँग पर निम्न बातों का क्या प्रभाव पड़ेगा?

क) कॉफी महँगी हो जाए

.....

.....

ख) आपकी आमदनी बढ़ जाए

.....

.....

ग) और अचानक आपके घर में कुछ मेहमान आ टिकें।

.....

.....

2.5 वस्तु का माँग-वक्र

भाग 2.4.1 में हमने एक वस्तु की माँग को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों के बारे में बातचीत की है। पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि उन कारकों के अतिरिक्त भी कितनी ही बातें वस्तु की माँग को प्रभावित कर सकती हैं। फिर भी जिन चार कारकों के विषय में पहले चर्चा की गई है, वही माँग के प्रमुख निर्धारक माने जाते हैं। यदि हम वस्तु की अपनी कीमत के अलावा शेष तीनों कारकों का मान स्थिर मान लें तो वस्तु की अपनी कीमत और उसकी माँग में संबंध स्पष्ट हो सकता है। इसी को हम माँग-फलन, माँग-सारणी या माँग-वक्र का नाम देते हैं। माँग-सारणी वस्तु कीमतों तथा उनके साथ जुड़ी संभावित उपभोक्ता की माँगी गई मात्रा दिखाती है। उसे एक तालिका के रूप में दिखाया जा सकता है:

माँग तालिका

दूध की कीमत (रुपये प्रति लीटर)	20	15	10	5
माँगी गई मात्रा (लीटर)	1	1.5	3	6

माँग-वक्र किसी वस्तु की अपनी कीमत तथा माँगी गई मात्रा के बीच संबंध दर्शाता है। यह मात्रा तथा कीमत के बीच फलनीय संबंध **(functional relationship)** दिखाता है। मान लीजिए वस्तु

x है, उसकी माँग Q_x^d और उसकी कीमत P_x है, तो इस वस्तु का माँग-फलन (demand function) का स्वरूप यह होगा:

$$Q_x^d = f(P_x)$$

यह फलन केवल इतना बताता है कि माँगी गई मात्रा वस्तु की कीमत पर निर्भर करती है। यहाँ कीमत 'कारण' (cause) है और माँग 'प्रभाव' (effect)। दूसरे शब्दों में, यह भी कहा जा सकता है कि इस फलन में P_x स्वतंत्र चर (independent variable) है तथा Q_x^d उस पर आश्रित चर (dependent variable) है। इन्हें ही क्रमशः बहिर्जात (exogenous) तथा अंतर्जात (indogenous) नाम भी दिया जा सकता है। इस माँग-फलन की परिभाषा 'शेष सभी बातें पूर्ववत्' रहने की मान्यता के आधार पर की जाती है। इसका अर्थ यह है कि यदि कीमत के अतिरिक्त माँग पर प्रभाव डालने वाले अन्य कारक स्थिर रहें, तो माँग-फलन वस्तु की माँग पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी देता है। दूसरे शब्दों में, जब किसी वस्तु की व उसकी माँग के संबंधों का विश्लेषण किया जाता है तो माँग पर प्रभाव डालने वाले कारकों को स्थिर माना जाता है। इन अन्य प्रभावी कारकों में संबंधित वस्तुओं की कीमतें, उपभोक्ता की आमदनी तथा उपभोक्ता की पसंद शामिल होती है।

माँग-वक्र का रेखाचित्र द्वि-आयामी होता है। हम क्षैतिज अक्ष (horizontal axix) पर माँगी गई मात्रा शीर्ष अक्ष (vertical axix) पर कीमतें दर्शातें हैं। इसे हम समझने हेतु क्रमशः 'पड़ी रेखा' तथा 'खड़ी रेखा' भी कह सकते हैं। हम जानते हैं कि वस्तु की कीमत तथा माँग के बीच विपरीत संबंध होता है। माँग-वक्र का बाएँ से दाएँ नीचे की ओर जाना इस संबंध को दिखाता है। सुविधा के लिए हम ऐसा वक्र सीधी रेखा वाला माँग-वक्र ले लेते हैं जो कि चित्र 2.1 में दिखाया गया है।

चित्र 2.1

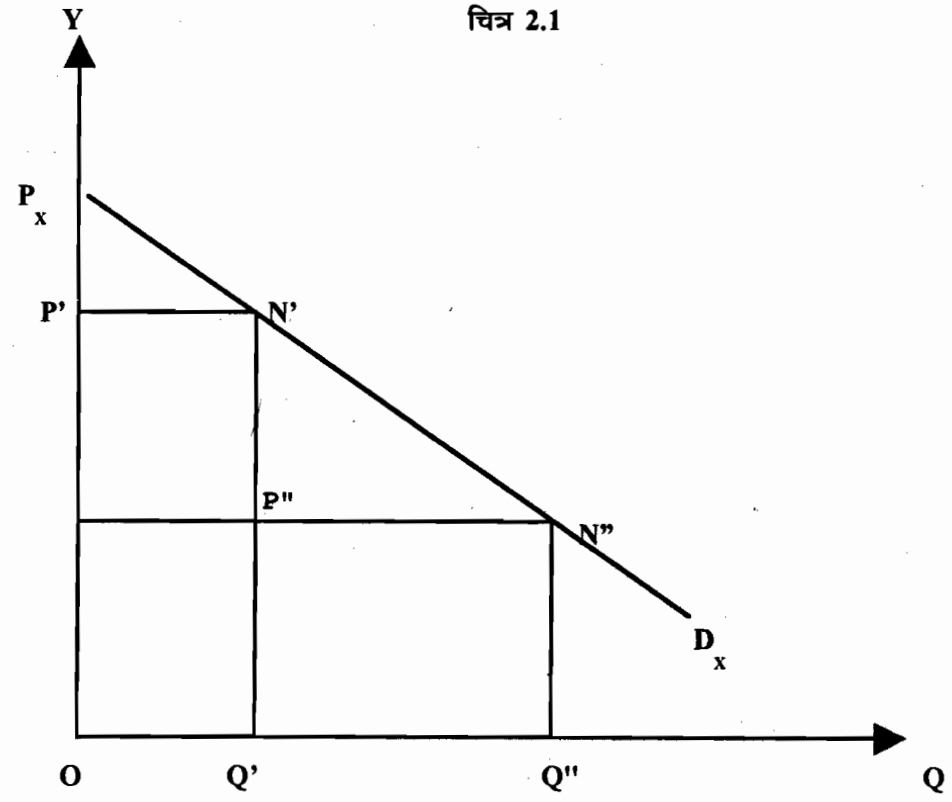

चित्र 2.1 : OP' कीमत पर उपभोक्ता D_x वक्र के बिंदु N' पर वस्तु की OQ' मात्रा की माँग करता है। कीमत गिरकर OP" हो जाने पर उपभोक्ता N" बिंदु पर पहुँच जाता है। अब वह OQ" मात्रा में इस वस्तु का उपयोग करेगा।

वस्तु (दूध) की माँगी गई मात्रा O_x को हमने क्षैतिज अक्ष (X-अक्ष) पर दर्शाया है और कीमत P_x को शीर्ष अक्ष (Y-अक्ष) पर। वस्तु की मात्रा सामान्यतः उस वस्तु की अपनी स्वाभाविक इकाइयों में दर्शाई जाती है– जैसे दूध की इकाई लीटर रहती है। इसी प्रकार हम कीमत रुपयों में– जैसे 8 रुपये प्रति लीटर या 12 रुपये प्रति लीटर आदि में दिखाते हैं। दाहिनी ओर ढलवाँ माँग-वक्र यह स्पष्ट करता है कि वस्तु की कीमत कम होने पर उसकी माँग अधिक हो जाती है। इसके विपरीत कीमत बढ़ने पर माँग कम हो जाती है। यह उपभोक्ता का सामान्य व्यवहार है। माँग-वक्र का ढलान दाहिनी ओर ही क्यों होता है, इस बारे में हम काफी विस्तार से इकाई 4 और 5 में चर्चा करने वाले हैं। एक दाहिनी ओर ढलवाँ माँग-वक्र ही माँग का नियम दर्शाता है। इस नियम के अनुसार अन्य सभी बातें स्थिर रहने पर उपभोक्ता कीमत कम होने पर ज्यादा माँग करता है तथा कीमत बढ़ने पर पहले की अपेक्षा कम माँग करता है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि यदि माँग-वक्र एक सीधी रेखा तो उससे जुड़ा हुआ माँग-फलन एक रेखीय फलन (linear equation) होगा, यथा :

$Q^d_x = a - bP_x$ यह 'a' मात्रा अवरोध (intercept) तथा 'b' ढलान (slope) है। 'b' मूल्य के कारण होने वाली माँग के दर में परिवर्तन को दिखाता है। इस प्रकार, एक और बात पर ध्यान देना आवश्यक है : यद्यपि हम माँग को कीमत पर निर्भर मानते हैं पर जब

$$b = \frac{dQ}{dP}$$

माँग-वक्र का रेखाचित्र बनाते हैं तो सामान्य गणितीय परंपरा से हटकर हम प्रतिलोम (inverse) चित्र का रेखांकन करते हैं। सही मायने में चित्र 2.1 हमारे माँग-फलन के प्रतिलोम स्वरूप अर्थात् $P_x = A - BQ_x$ का चित्र है। यहाँ $A = a/b$ है और यह कीमत अवरोध है, तथा $B = 1/b$ है और यह प्रतिलोम माँग-वक्र का ढलान तथा dP/dQ के समान है।

नोट : अर्थशास्त्र में स्वतंत्र चर को शीर्ष-अक्ष (y-अक्ष) पर तथा आश्रित चर को क्षैतिज-अक्ष (x-अक्ष) दिखाने की परंपरा है। गणित में परंपरा इसके विपरीत है।

अपने सामान्य रूप में माँग-फलन $Qd_x = a - bP_x$ यह बताता है कि विभिन्न कीमतों पर उपभोक्ता अधिकतम कितनी-कितनी मात्रा खरीदने को तैयार होगा।

इसी तरह प्रतिलोम माँग-वक्र $P_x = A - BQ_x$ यह बताता है कि प्रत्येक मात्रा की उपभोक्ता अधिक से अधिक क्या कीमत चुकाने को तत्पर होगा (उसके पास उस कीमत को न चुकाने का केवल एक विकल्प बचता है कि वह उस वस्तु का उपयोग ही नहीं करे)। इस तरह से माँग-वक्र अपने दोनों ही स्वरूपों में उपभोक्ता की अधिकतम सीमा दिखाता है। OQ' मात्रा के लिए कोई उपभोक्ता Op' से अधिक कीमत नहीं देगा। दूसरे शब्दों में, OP' कीमत पर उपभोक्ता अधिक से अधिक OQ' मात्रा ही खरीदेगा।

उपभोक्ता द्वारा चुकाई गई कीमत का ही दूसरा नाम विक्रेता की औसत आय (agerage revenue) है। इसलिए प्रतिलोम माँग-वक्र को हम औसत आगम (AR) वक्र का नाम देते हैं। जहाँ पर यह माँग-वक्र कीमत अक्ष को स्पर्श करता है, वहाँ की मात्रा शून्य हो जाती है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि A ऐसा कीमत स्तर है जिस पर उपभोक्ता को यह साहस ही नहीं होता कि वह कुछ खरीदारी कर ले। ऐसी कीमत को निषिद्ध (prohibited) कीमत कहते हैं।

1) माँग-फलन इस प्रकार हैं : $Q = 40 - 0.5\ P$। ज्ञात करें कि कीमत क्रमशः 5,4,3,2 तथा 1 रुपया प्रति इकाई होने पर उपभोक्ता कितनी-कितनी माँग करेगा।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) नीचे दिए गए दो फलनों का आप अर्थ (interpretation) किस प्रकार निकालेंगे?

a) $Q = 100 - 2P$

b) $P = 50 - 0 - 5\ Q$

इनकी व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 पूर्ति का अर्थ

अपने तकनीकी ज्ञान और संसाधन मात्रा के अनुसार उत्पादन कर सकने की क्षमता को ही किसी उत्पादक अथवा फर्म की पूर्ति कहते हैं। किसी वस्तु के उत्पादन होने पर ही उसकी पूर्ति संभव होगी। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि पूर्ति उत्पादन के साथ ही जुड़ी हुई है।

2.7 वस्तु का पूर्ति-वक्र

किसी वस्तु का कितना उत्पादन होगा या उसकी कितनी मात्रा बाज़ार में उपलब्ध कराई जाएगी। यह बात अनेक कारकों पर निर्भर है। इन कारकों में से प्रमुख है वस्तु की अपनी कीमत, उसके उत्पादन में लगे साधनों की कीमतें तथा प्रौद्योगिकी इत्यादि। सामान्यतः हम वस्तु का उसकी अपनी कीमत को ही सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण कारक मानते हैं। इसी के अनुसार उत्पादक अपने पूर्ति संबंधी निर्णय लेता है। अतः किसी वस्तु की पूर्ति फलन का सामान्य स्वरूप इस प्रकार रहता है :

$$Q^s_x = (P_x)$$

यहाँ x वस्तु का द्योतक है। यह फलन एक प्रकार का कारण-प्रभाव संबंध दर्शाता है। इस फलन का अर्थ है कि वस्तु की कीमत तथा पूर्ति में प्रत्यक्ष संबंध है। यदि कीमत में वृद्धि होगी तो उत्पादक पहले की अपेक्षा ज्यादा मात्रा उत्पादित कर बाज़ार में भेजना चाहेगा। इसके विपरीत यदि बाज़ार कीमत में गिरावट आती है तो उत्पादक भी उत्पादन एवं आपूर्ति और कम करने को बाध्य हो जाता है। उत्पादकों का यही सामान्य व्यवहार होता है। पूर्ति फलन द्वारा दर्शाया गया यह संबंध भी माँग-वक्र की ही भाँति 'अन्य सभी बातें पूर्ववत्' रहने की मान्यता पर आश्रित हैं। इन पूर्ववत् रहने वाली बातों में तकनीकी ज्ञान, साधनों की कीमतें तथा अन्य सभी वस्तुओं की कीमतें आदि सम्मिलित हैं।

एक आपूर्ति तालिका में किसी वस्तु x की विभिन्न कीमतों पर किसी उत्पादक द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली मात्राएँ दिखाई जाती हैं। यह तालिका बताती है कि बाज़ार में अलग-अलग कीमतों पर यह उत्पादक कितनी-कितनी मात्रा में यह वस्तु बेचने को तैयार होगा। इस तालिका का स्वरूप कुछ इस तरह हो सकता है:

पूर्ति तालिका

वस्तु x कीमत (प्रति इकाई) (रुपये)	वस्तु x की उत्पादित/बाज़ार में भेजी गई मात्रा (इकाइयों में)
9	100
8	80
7	75
6	65
5	45

इसी तालिका को हम द्वि-अक्षीय चित्र में भी दिखा सकते हैं। माँग-वक्र की भाँति यहाँ भी कीमत की शीर्ष-अक्ष पर और पूर्ति की क्षितिजीय अक्ष पर मात्रा दिखाई जाती है। इसे ही पूर्ति-वक्र कहा जाता है। हम चित्र 2.2 में उपरोक्त आँकड़ों पर आधारित पूर्ति-वक्र दिखा रहे हैं:

चित्र 2.2

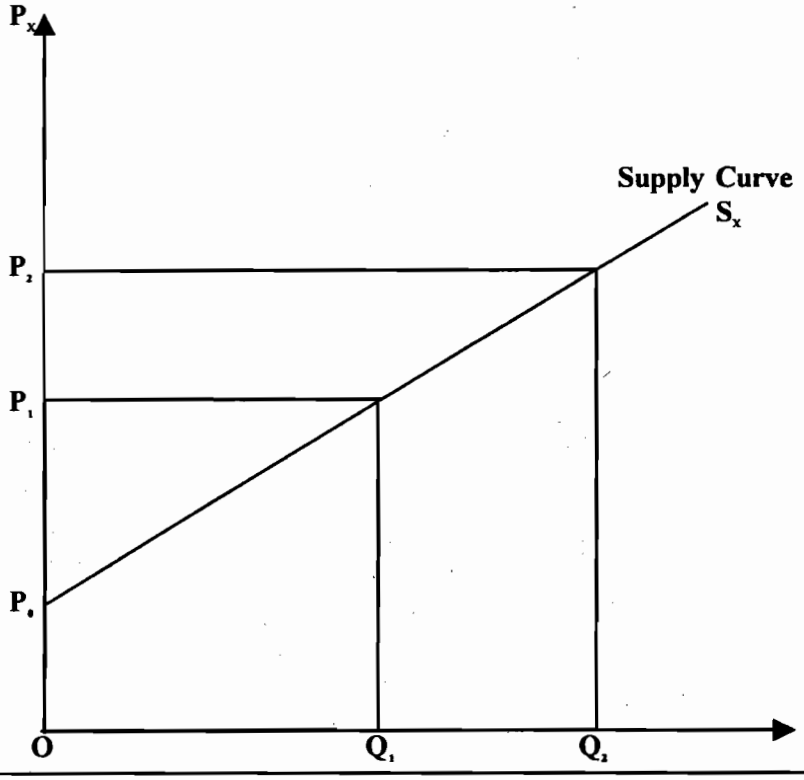

चित्र 2.2: जब मूल्य OP_0 होता है तो उत्पादक कुछ भी पूर्ति नहीं करता। जब मूल्य OP की ओर बढ़ता है पूर्ति OQ_1 होता है। जब मूल्य OP_2 को पहुँचता तब उत्पादक OQ_2 की पूर्ति को इच्छुक रहता है।

पूर्ति-वक्र रेखीय भी हो सकता है और वक्रीय भी। हम चित्र 2.3(क) तथा 2.3(ख) में ये दोनों दिखा रहे हैं। मुख्य बात यह है कि जैसे वस्तु की कीमत बढ़ती जाती है उत्पादक पहले की अपेक्षा ज्यादा मात्रा बाजार में बेचने को प्रस्तुत होता है। ऊँची कीमत अधिक आपूर्ति को आकृष्ट करती है।

चित्र 2.3(क) तथा 2.3(ख)

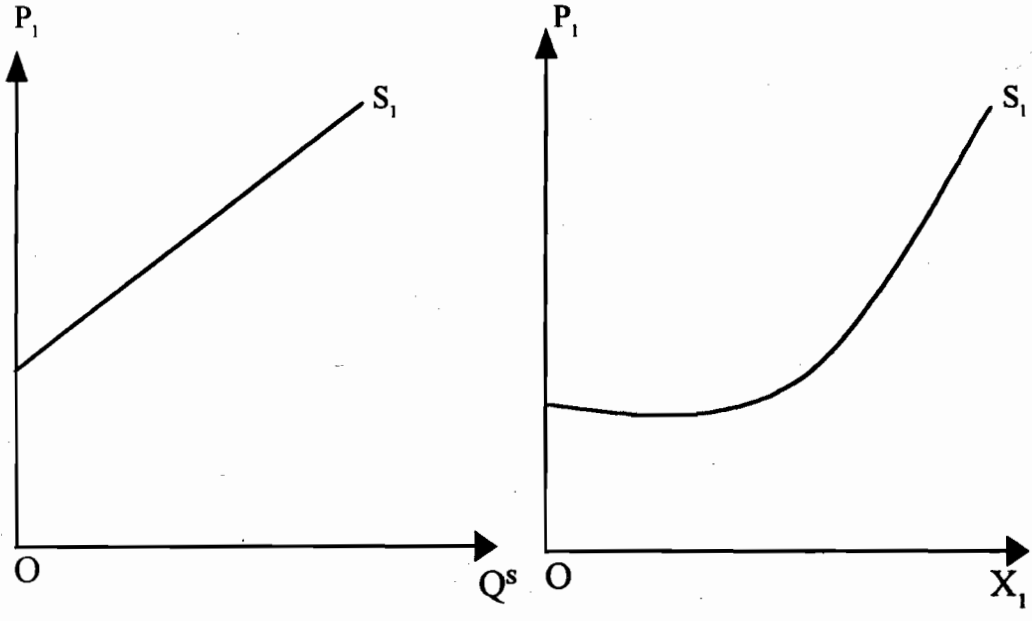

चित्र 2.3 (क) तथा 2.3 (ख) दिखा रहे हैं कि पुर्ति वक्र रेखाएं और वक्रीय हो सकती हैं।

बाज़ार में बेचने को प्रस्तुत होता है। ऊँची कीमत अधिक आपूर्ति को आकृष्ट करती है। बाज़ार आपूर्ति-वक्र अथवा पूर्ति-वक्र किसी बाज़ार में कार्य कर रहे सभी उत्पादकों के पूर्ति-वक्रों का योग होता है क्योंकि यह वक्र पूर्ति फलन का वक्र है, यह भी 'अन्य सभी बातें पूर्ववत्' रहने की मान्यता पर आधारित है और केवल वस्तु की अपनी कीमत तथा उपलब्ध करायी जा रही मात्रा के बीच के संबंध को ही दिखाता है।

माँग तथा पूर्ति की अवधारणाओं की परिभाषाओं में 'संभावित' शब्द पर बहुत बल दिया जाता है। प्रत्येक क्रेता तथा विक्रेता बाज़ार में कुछ पूर्वधारणाओं के साथ ही प्रवेश करता है। यदि क्रेता किसी विशेष कीमत तक ही खरीदारी के इरादे से बाज़ार में आते हैं तो अधिक कीमत वृद्धि उन्हें बिना कुछ खरीदे ही वापिस जाने को मजबूर कर सकती है। इसी प्रकार कीमत बहुत कम रहने पर जो विक्रेता ऊँचे दामों में माल बेचना चाहते थे उन्हें मायूस लौटना पड़ सकता है। अतः प्रत्येक क्रेता तथा विक्रेता बाज़ार के लेन-देन में संभावित भागीदार ही होता है। वास्तव में कौन कितनी मात्रा खरीदता या बेचता है यह सब तो उनकी बाज़ार कीमतों से अपेक्षाओं तथा वास्तविक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इसीलिए माँग एवं पूर्ति की परिभाषाओं में 'संभावित' पर इतना बल दिया जाता है।

चित्र 2.4

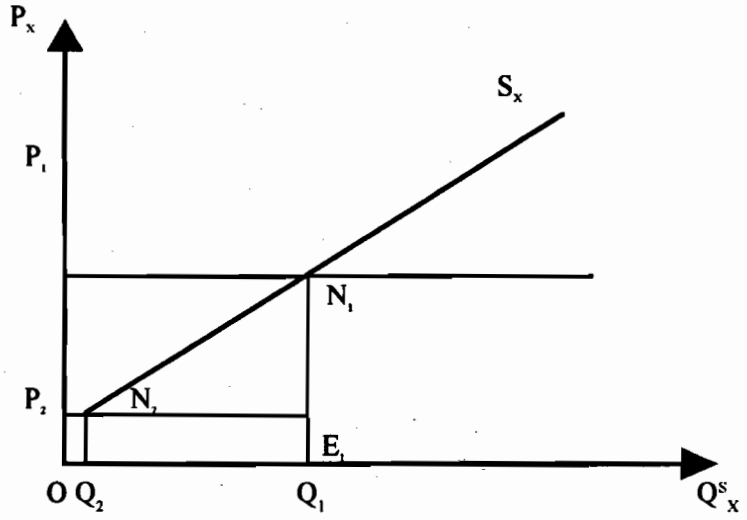

चित्र 2.4 पर गौर कीजिए, यदि बाज़ार में OQ_1 मात्रा आनी ही चाहिए तो ऐसा OP_1 स्तर पर ही संभव होगा। यदि कीमत E_1Q_1 हो जाए तो OQ_1 उत्पादन करना तथा बाज़ार में भेजना सहज नहीं होगा। यदि उत्पादक इस कीमत पर भी OQ_1 का ही उत्पादन करेगा तो वह निश्चित रूप से घाटे में रहेगा।

माँग-वक्र की ही भाँति पूर्ति-वक्र भी विक्रेताओं (उत्पादक-विक्रेताओं) की कितनी मात्रा बेचने की तैयारी है, या योजना है, इसी बात को दर्शाता है। किसी कीमत स्तर पर उत्पादक ज्यादा से ज्यादा कितनी मात्रा बेचना चाहता है, इसी बात को हम पूर्ति-वक्र द्वारा दिखाते हैं। दूसरे शब्दों में, हम यह भी कह सकते हैं कि यदि हम यह सुनिश्चित करना चाहें कि किसी वस्तु की पूर्व निर्धारित मात्रा का उत्पादन अवश्य हो तो हमें उसकी न्यूनतम कितनी कीमत देने को तैयार रहना चाहिए। पूर्ति-वक्र यह बताता है कि वस्तु का उत्पादक अपनी लागतें पूरी करने एवं कुछ सामान्य लाभ अर्जित करने हेतु न्यूनतम कितनी कीमत प्राप्त करना आवश्यक समझता है।

1) एक आपूर्ति-वक्र इस प्रकार है : $Q = -4 + 4P$
यदि कीमत क्रमशः 1, 2, 3, 4, 5 तथा 6 रुपये प्रति इकाई हो तो मात्रा कितनी-कितनी रहेगी ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) निम्नांकित दो फलनों पर ध्यान दें :

क) $Q = -2 + 4P$

ख) $P = 5 + 0.25Q$

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 अर्थशास्त्र में कीमत का अर्थ

अर्थशास्त्री जब भी बात करते हैं, वे किसी न किसी तरह की कीमत तक ज़रूर पहुँच ही जाते हैं। उनकी बातचीत में गेहूँ या दूध की अथवा फिर कार या सब्जियाँ या फिर साधन सेवाओं की कीमतों जैसे मज़दूरी या ब्याज-भाड़ा सहज रूप से सम्मिलित रहते हैं। यदि बाज़ार में कोई वस्तु या सेवा है तो उसकी कीमत भी अवश्य ही होती है। कीमत दो प्रकार से व्यक्त की जा सकती है। प्रथमतः, हम कीमत को एक धारक वस्तु के रूप में व्यक्त कर सकते हैं। यदि सोना हमारा सामान्य मूल्यानधारक हो तो फिर हर वस्तु की सुनिश्चित मात्रा का मूल्य मान सोने की पूर्व निश्चित इकाइयों में व्यक्त होगा। जैसे एक ग्राम सोना, प्रति क्विंटल गेहूँ आदि। इस बात पर ध्यान अवश्य दीजिए कि ऐसी व्यवस्था में मूल्यानधारक की अपनी कीमत सदा एक इकाई ही रहती है। सैद्धांतिक दृष्टि से किसी भी वस्तु को मूल्यानधारक के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। पर व्यावहारिक दृष्टि से कुछ निश्चित गुणधर्मों वाली वस्तु ही इस कार्य को सहज भाव से पूरा कर सकती है। ये गुण हैं : इस वस्तु की बहुत छोटी-छोटी इकाइयाँ करना संभव हो, यह बहुत फैलावपूर्ण न हो, इसमें भौतिक क्षय नहीं होता हो तथा इसे एक स्थान से दूसरे, स्थान तक सुगमतापूर्वक ले जाना संभव हो। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि हमारा वस्तु का सामान्य लेन-देन में इस्तेमाल आशय करना नहीं है।

इसे तो केवल लेख की ऐसी इकाई **(unit of account)** की तरह ही प्रयोग करना चाहते हैं जिसमें सभी अन्य वस्तुओं के मूल्य व्यक्त हो सकें। अतः मूल्यानधारक की इकाइयों में व्यक्त कीमतें विभिन्न वस्तुओं की विनिमय दरें ही बन जाती हैं। सभी कीमतें X_i/X_g तरह के अनुपात हैं जहाँ X वस्तु की 'i' सहज प्राकृतिक इकाई है तथा X_g सोने की इकाई है।

कीमत को व्यक्त करने का दूसरा तरीका इसे लेखा के एक परम (absolute) इकाई में व्यक्त करना है। इसके साथ कोई भौतिक तत्त्व नहीं जुड़ा होता। यदि किसी वस्तु की एक इकाई बेची जाती है तो क्रेता के खाते में कुछ लेखा इकाइयाँ जुड़ जाती हैं। खरीदार के खाते से उतनी ही लेखा इकाई घटाना इसी लेन-देन का दूसरा पहलू होता है। इस तरह किसी वस्तु की कीमत खाते में जोड़ी गई (या घटाई गई) प्रति इकाई लेखा इकाइयों की संख्या बन जाती हैं। भारत में रुपया ऐसी ही लेखा इकाई है। अतः किसी भी वस्तु की कीमत उसकी एक इकाई के बदले लिए (या दिए) जाने वाले रुपयों की संख्या ही होगी। 'नोट और सिक्कों का अपना कोई निहित मूल्य नहीं होता। ये तो केवल सभी खातों में जमा में दिखाई जाने वाली लेखा इकाइयों का चिह्न मात्र है। उपरोक्त दोनों विचारों की तुलना से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि दूसरी अभिव्यक्ति ही वास्तव में कीमतों का सही व्यावहारिक स्वरूप है।' (Gravelle and Rees)।

बोध प्रश्न 5

1) यदि चार किलोग्राम गेहूँ के बदले एक किलोग्राम चावल का विनिमय हो तो यहाँ कीमत की कौन-सी अवधारणा का प्रयोग होगा?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) एक साइकिल की कीमत एक हजार रुपये है। यह कीमत का कौन-सी अवधारणा का संकेत देता है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.9 संतुलन तथा असंतुलन का अर्थ

अन्य कई अवधारणाओं की तरह अर्थशास्त्र में संतुलन की अवधारणा भी भौतिकी, विशेष रूप से यांत्रिकी भौतिकी, से ली गई है। यांत्रिकी में संतुलन वह अवस्था है जब विभिन्न परस्पर विरोधी शक्तियों के प्रभाव के अधीन कोई पिण्ड (body) अपनी यथास्थिति में ही बना रहता है। दूसरे शब्दों में विभिन्न शक्तियों के प्रभाव एक-दूसरे को इस प्रकार काट देते हैं कि पिण्ड की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता। दोनों ओर की शक्तियों में संतुलन हो जाता है। इसी तरह अर्थशास्त्र में भी

बाज़ार में तभी संतुलन होता है जबकि संभावित क्रय और विक्रय शक्तियाँ संतुलन में आती हैं। दूसरे शब्दों में, जब संभावित विक्रेता उतनी ही मात्रा बेचना चाहते हों जितनी कि संभावित क्रेता खरीदने के लिए तत्पर हैं तो बाज़ार में संतुलन आ जाएगा। जिस कीमत पर यह क्रय-विक्रय तय होता है। वहीं संतुलन कीमत होगी तथा जितनी मात्रा का इस कीमत पर विनिमय होता है उसी को संतुलन मात्रा कहा जाता है। संतुलन की यह अवधारणा स्थैतिक **(static)** है– यह बाज़ार में आराम की स्थिति की सूचक है। जब तक माँग एवं पूर्ति की शक्तियों में कोई बदलाव नहीं आता, बाज़ार में प्रत्येक विनिमय काल में उसी कीमत पर उतना ही लेन-देन होता रहता है। बाज़ार के 'आराम' के रूप में यहाँ संतुलन की परिभाषा की गई है।

संस्थापक **(neo-classical)** अर्थशास्त्र में संतुलन के विचार को कुछ अलग प्रकार से बताया गया है। यहाँ संतुलन की परिभाषा व्यक्तियों (यानि बाज़ार के भागीदारों) द्वारा चुनी हुई स्थिति के रूप में की जाती है। ग्रेवल एवं रीस **(Gravelle and Rees)** के अनुसार संतुलन वहीं होता है जहाँ आर्थिक एजेंट अपने आपको उसी स्थिति में पाते हैं, जिसमें वे अपने आपको पाना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में, यदि किसी कीमत पर जितना माल सभी उत्पादक बेचना चाहते हों बिक सके तथा जितना क्रेता लोग खरीदना चाहते हों खरीद सकें एवं यह खरीदी-बेची गई मात्रा भी एक समान ही हो तो बाज़ार में संतुलन होगा। इस बात की संभावना रहती है कि संतुलन की दोनों अवधारणाएँ हर परिस्थिति में समान रूप से लागू नहीं। लेकिन पूर्ण प्रतियोगिता की कीमत निर्धारण मॉडल में जहाँ माँग एवं पूर्ति-वक्र एक-दूसरे को काटते हैं, उसी बिंदु पर संतुलन संबंधी दोनों अवधारणाएँ एक समान ठीक बैठती हैं। स्थैतिक व्यष्टि अर्थशास्त्र **(static micro theory)** में हमारा संबंध बाज़ार की संतुलन स्थिति से ही है।

जब बाज़ार में माँग और पूर्ति की शक्तियों के बीच संतुलन नहीं रहता तो इसे ही असंतुलन का नाम दिया जाता है। जितनी मात्रा उपभोक्ता खरीदना चाहते हैं उस कीमत पर उत्पादक उतनी मात्रा बेचने को तत्पर नहीं होते। ऐसी स्थिति में बाज़ार में या तो माल जमा होने लगता है या फिर वस्तु की कमी हो जाती है। ऐसी स्थिति में कई बार सरकार बाज़ार को संतुलन में लाने के लिए अपने पास सुरक्षित भण्डारों के माध्यम से बाज़ार में सक्रिय हो सकती है। बाज़ार के असंतुलन को सुधारना अनिवार्य हो जाता है। ऐसा आर्थिक विश्लेषण गत्यात्मक **(dynamic)** कहलाता है। इसमें विभिन्न समय बिंदुओं पर बाज़ार का व्यवहार निहित रहता है। बाज़ार के असंतुलन की स्थिति में आर्थिक निर्णय करने वाले अधिकारियों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। वास्तव में तो संतुलन की स्थिति कभी भी प्राप्त नहीं हो पाती। अर्थव्यवस्था संतुलन की ओर जैसे ही बढ़ने लगती है, कोई न कोई गत्यात्मक शक्ति संतुलन प्राप्त करने में रुकावट डाले देती है। अतः यह कहा जा सकता है कि गत्यात्मक शक्ति संतुलन प्राप्त करने में रुकावट डाल देती है। अतः यह कहा जा सकता है कि असंतुलन का अध्ययन ही अधिक प्रासंगिक है। लेकिन इसकी अपेक्षा संतुलन का विश्लेषण सरल है और उसे करना आसान भी है।

बोध प्रश्न 6

1) तालिका में दी गई माँग एवं पूर्ति जानकारी को ध्यान से देखें और बताइए कि संतुलन स्तर पर कीमत तथा मात्रा क्या होगी?

कीमत	0	10	20	30	40	50	60
माँग	100	90	75	65	40	30	15
पूर्ति	0	0	40	65	80	90	100

2.10 सारांश

हमने इस इकाई का आरंभ समष्टि एवं व्यष्टि अर्थशास्त्र के बीच भेद से किया था। ये दोनों ही स्वरूप एक बाज़ार आश्रित अर्थव्यवस्था की कार्य-प्रणाली का अलग-अलग ढंग से ज्ञान कराते हैं। इनमें केवल समूहन तथा विसमूहन के स्तर का ही अंतर है। व्यष्टि अर्थशास्त्र में हम वि-समूहन **(disaggregation)** को इस स्तर तक ले जाते हैं कि केवल एक ही उपभोक्ता या एक ही उत्पादक-विक्रेता के व्यवहार पर चर्चा केंद्रित हो जाती है। समष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक इकाइयों तथा बाज़ारों को इस प्रकार समूहन **(aggregation)** करते हैं कि हमें उपभोग, निवेश रोज़गार या फिर वस्तु बाज़ार, मुद्रा बाज़ार या साधन बाज़ार जैसी बड़ी-बड़ी श्रेणियों के ही व्यवहार पर चर्चा करते हैं। व्यष्टि अर्थशास्त्र आंशिक संतुलन **(partial equilibium)** विश्लेषण पर आधारित है। इसमें प्रत्येक बाज़ार का अध्ययन शेष अर्थव्यवस्था को अलग रखते हुए किया जाता है। पर समष्टि अर्थशास्त्र व्यापक संतुलन **(general equilibium)** पर आधारित है जिसमें सभी बाज़ार एक दूसरे से संबंधित होते हैं। अर्थशास्त्र, समष्टि हो या व्यष्टि, बाज़ार से जुड़ा हुआ है। इसीलिए हमने बाज़ार की अवधारणा अर्थशास्त्री के दृष्टिकोण से। एक आम आदमी भले ही बाज़ार को ऐसा स्थान मानता हो जहाँ क्रेता-विक्रेता अपने-अपने लाभ की दृष्टि से सौदेबाज़ी करते हों, पर अर्थशास्त्र की दृष्टि से जब भी कोई दो व्यक्ति, स्थान या संदर्भ कुछ भी हो लेन-देन करना चाहते हों, बाज़ार बन जाता है। इस प्रकार किसी तरह की भौतिक सीमाओं का मोहताज़ नहीं रहता। ऐसा परिवहन एवं संचार की आधुनिक तकनीक के विकास के कारण संभव हुआ है।

बाज़ारों में संभावित उपभोक्ता क्रेता तथा उत्पादक विक्रेता लेन-देन करते हैं। अतः क्रेताओं के माँग-फलन एवं विक्रेताओं का पूर्ति फलन ही वे दो शक्तियाँ हैं जो बाज़ार में संतुलन (कीमत) एवं उस कीमत पर खरीदी-बेची गई मात्रा का निर्धारण करती हैं। हमने कीमत को एक लेखा-इकाई के रूप में परिभाषित किया है। यह इकाई अमूर्त **(abstract)** भी हो सकती है तथा वास्तविक भी। भारत में वस्तुओं की कीमतें हम रुपयों में व्यक्त करते हैं। किसी वस्तु की एक इकाई के लिए दिए गए रुपये ही उस वस्तु की कीमत कहे जाते हैं।

अर्थशास्त्र में संतुलन कीमत वह कीमत है जिस पर माँगी गई मात्रा पूर्ति के समान होती है। इस कीमत पर बाज़ार में खरीदार उतनी मात्रा लेना चाहते हैं जितनी की विक्रेता बेचने को उत्सुक हैं। अतः विक्रय के लिए आया सारा माल बिक जाता है। माँग-वक्र दाहिनी ओर ढलवाँ होता है तथा पूर्ति-वक्र दाहिनी ओर उठता हुआ होता है। अतः संतुलन कीमत के अतिरिक्त किसी भी अन्य कीमत पर बाज़ार में असंतुलन होगा, अर्थात् या तो माँग पूर्ति से अधिक होगी या कम रह जाएगी। माँग एवं पूर्ति के एक समान न होने का ही दूसरा नाम बाज़ार का असंतुलन है। यह असमानता ऐसी प्रक्रिया को जन्म देती है कि माँग अथवा पूर्ति (अथवा दोनों ही) में इस तरह के उतार-चढ़ाव आते हैं कि बाज़ार पुनः संतुलन की ओर अग्रसर होता है। संतुलन की ओर बाज़ार की यात्रा तभी सफल हो पाती है जबकि माँग एवं पूर्ति-वक्र सामान्य आकार-प्रकार के हों। अन्यथा, यदि संतुलन हो भी तो वह स्थायी नहीं रहता।

2.11 शब्दावली

असंतुलन : विरोधी शक्तियों के बीच संतुलन का अभाव। जब माँग एवं पूर्ति की शक्तियों का सामंजस्य नहीं रहता तो असंतुलन हो जाता है।

माँग चक्र	:	'अन्य बातें पूर्ववत् रहने पर' विभिन्न कीमतों पर उपभोक्ता कितनी मात्रा में वस्तु को खरीदना चाहता है– इसी संबंध को दर्शाने वाला रेखाचित्र ।
पूर्ति एवं पूर्ति फलन	:	पूर्वनिर्धारित संसाधन, कीमतों तथा तकनीकी ज्ञान स्तर पर विभिन्न कीमतों पर वस्तु की उत्पादन मात्रा उसकी पूर्ति है । इस कीमत एवं पूर्ति के बीच के संबंध को ही पूर्ति फलन का नाम दिया जाता है ।
कीमत	:	किसी वस्तु की इकाई के लिए प्राप्य मूल्यानधारक (व्यवहार में मुद्रा) की इकाइयों की संख्या ।
बाज़ार	:	जब भी दो (या अधिक) व्यक्ति कुछ क्रय-विक्रय करने के लिए तैयार हों, बाज़ार का सृजन हो जाता है । यह बाज़ार समय, काल या स्थान की सीमाओं से बँधा हुआ नहीं रहता । आधुनिक संचार व्यवस्था के विकास ने बाज़ार को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त कर दिया है ।
माँग	:	वे मानवीय इच्छाएँ जिन्हें पूरी करने के लिए कीमत भुगतान करने की इच्छा तथा योग्यता हो । यह प्रभावी माँग है– केवल आकांक्षा मात्र नहीं ।
माँग-फलन	:	'अन्य' बातें पूर्ववत् रहने पर' वस्तु की अपनी कीमत एवं उसकी माँग की मात्रा के बीच का संबंध ।
व्यष्टि	:	विश्लेषण की एक छोटी-सी इकाई ।
संतुलन	:	परस्पर शक्तियों के समान होने की स्थिति । बाज़ार में जब माँग तथा पूर्ति बराबर हो जाए तो माँग शक्तियों तथा पूर्ति शक्तियों के बीच सामंजस्य हो जाता है ।

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Lipsey, Richard (1997), *Introduction to Positive Economics* (8th Edition), Oxford University Press (ELBS Edition), London.

Salvatore, D.(1996), *Micro Economic Theory* (Schaum Series 3rd Edition), McGraw-Hill Book Co., New York.

Begg, D.R., Dornbusch, S.Fischer(1991), *Macroeconomics* (4th Edition), McGraw-Hill Book Co. New York

Salvatore D.(1995), *Micro Economics* (2nd Edition), Harper Collins Publishers, New York.

Nicholson, W.(1995), *Intermediate Micro Economics* (VIth Edition), Dryden Press, New York.

Trearthen Timothy (1996), *Micro Economics,* (1st Edition, 1996) Macmillan, New York.

2.13 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

बोध प्रश्न 1

1) क) व्यष्टि अर्थशास्त्र

ख) व्यष्टि अर्थशास्त्र

ग) व्यष्टि अर्थशास्त्र

घ) समष्टि अर्थशास्त्र

बोध प्रश्न 2

2) तीन हजार रुपये की मासिक आमदनी वाला व्यक्ति टैक्सी से आने-जाने का खर्च नहीं उठा सकता। अतः आपकी टैक्सी की यात्रा की इच्छा केवल एक महत्त्वाकांक्षा रह जाती है प्रभावी माँग नहीं बन पाती।

3) चाय की माँग वक्र दाहिनी और खिसक है। अर्थात् पुरानी कीमतों पर आप अपेक्षाकृत अधिक चाय खरीदना चाहते हैं। इसी को माँग से वृद्धि का नाम भी दिया जाता है।

बोध प्रश्न 3

1)

कीमत (रुपयों में)	माँग (मात्रा) : Q = 40-0.5P (भौतिक इकाइयों में)
5	37.5
4	38.0
3	38.5
2	39.0
1	39.5
0	40.0

2) क) किसी भी दी हुई कीमत पर यह समीकरण माँग की मात्रा दर्शाता है, अतः इसे माँग-फलन कहा जा सकता है।

ख) यह किसी भी निश्चित मात्रा की यह अधिकतम कीमत दिखाता है जो उपभोक्ता चुकाने को तैयार है। अतः यह समीकरण विलोम माँग-वक्र (inverse demand curve) दिखाता है।

1)

कीमत (रुपयों में)	माँग (मात्रा) : Q = 4 – + 4P (भौतिक इकाइयों में)
1	0
2	4
3	8
4	12
5	18
6	20

2) क) यह समीकरण दिखलाता है कि किसी भी दी गई कीमत पर उत्पादक कितनी मात्रा बेचने को तैयार होगा। अतः यह पूर्ति-वक्र है।

ख) यह विलोम पूर्तिवक्र है। यह उस न्यूनतम कीमत को दिखाता है जिसे एक उत्पादक पूर्व निश्चित मात्रा की आपूर्ति के बदले स्वीकार करने को तत्पर हो। इसमें उत्पादन लागत तो पूरी होनी ही चाहिए।

बोध प्रश्न 5

1) कीमत एक विनिमय दर के रूप में। यह एक लेखा की इकाई द्वारा व्यक्त की गई है।

2) यह किसी वस्तु की मौद्रिक कीमत है। इसे रुपये नामक आमूर्त इकाई में व्यक्त किया गया है।

बोध प्रश्न 6

1) संतुलन कीमत 30 रुपये तथा संतुलन मात्रा 65 किलोग्राम।